राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा - 2005 के अनुसार कक्षा - 3 के बाद से मौखिक और आलोचनात्मक चिन्तन के विकास के प्रयास किए जाने चाहिए। कक्षा - 4 के बाद बच्चे स्वयं भाषा के मानक रूप को ग्रहण कर लेते हैं, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान घरेलू भाषा के प्रति उचित सम्मान का भाव बना रहना चाहिए। यह रूप रेखा इस बात पर जोर देता है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे यदि भाषा में गलतियाँ करते हैं तो यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि गलतियाँ सीखने का हिस्सा होती हैं और बच्चे जब इस लायक हो जाएं तो वे स्वयं उसमें सुधार कर लेते हैं। गलतियों पर ध्यान देने के बजाय अधिक समय बच्चों को विस्तृत, सृजनात्मक और चुनौतीपूर्ण निवेश दिये जाने चाहिए।

भाषा शिक्षण को केवल भाषा की कक्षा तक सीमित न रखकर यह प्रयास किया जाए कि विज्ञान व गणित की कक्षाएँ भी गणित की कक्षाएँ बन सकें। जहाँ किसी विषय को सीखने का मतलब उसकी धारणाएँ, उसकी शब्दावली को सीखने के साथ-साथ आलोचनात्मक रूप से चर्चा हो सके और उसके बारे में लिखना माना जाए। कहानी, नाटक, कविता, गीत के आधार पर बच्चे अपनी संस्कृति से जुड़ते हैं, इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने के अवसर प्राप्त होते हैं। अत

दस्तावेज इस बात की ओर संकेत करता है कि उच्चस्तरीय भाषिक कौशल का एक भाषा से दूसरी भाषा में आसानी से स्थानान्तरण हो सकता है। अतः द्वितीय भाषा, उदाहरण के लिए अंग्रेजी की पाठ्यचर्या के दोहरे लक्ष्य निर्धारित किए जा सकते हैं।

पहला :- प्राकृतिक भाषा ज्ञान जैसे बुनियादी दक्षता प्राप्त करना।

दूसरा :- साक्षरता द्वारा भाषा का ऐसा विकास कि वह अमूर्त चिन्तन और ज्ञान का उपकरण बने।

यह दस्तावेज इस बात पर भी जोर देता है कि भाषा माहौल को समृद्ध बनाने के लिए निवेश समृद्ध सम्प्रेषण का वातावरण प्रदान कराए जाने की आवश्यकता है। ऐसा परिवेश जहाँ पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त विद्यार्थी द्वारा चयन किए गए पाठ, मिडिया सामग्री, कक्षा, पुस्तकालय का उपभोग, कर बच्चों के साथ प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषण हो। हर शिक्षक में यह कौशल निहित होना चाहिए जिससे वह प्रत्येक परिस्थिति व स्तर के अनुरूप उचित ढंग से भाषा पढ़ा सके।

भाषा शिक्षण के लक्ष्य :-

भाषा शिक्षण में निम्नलिखित दिशा - निर्देश लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक है —

① भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए, केवल भाषा शिक्षण के अर्थ में ही नहीं, बल्कि रणनीति तैयार करने के लिहाज से भी ताकि बहुभाषिक कक्षा को एक संसाधन के तौर पर प्रयोग में लाया जा सके।

② स्कूल में शिक्षण का माध्यम घरेलू होना चाहिए।

③ अगर स्कूल में उच्चतर स्तर पर बच्चों की घरेलू भाषा शिक्षण की व्यवस्था न हो तो प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा घरेलू भाषा के माध्यम से दी जाए। यह आवश्यक है कि हम बच्चे की घरेलू भाषाओं को सम्मान दें।

④ बच्चे प्रारंभ से ही बहुभाषिक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। त्रिभाषा फार्मूला को उसके मूलभाव के साथ लागू किए जाने की जरूरत है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में दिये विचारों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए प्रत्येक स्तर पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया। इसी का अनुसरण करते हुए तीन चरणों में पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की प्रक्रिया भी चल रही है।

प्रथम चरण में सत्र 2006-07 के लिए, कक्षा 1, 3, 6, 9 और 11 की सभी पुस्तके कक्षाओं में पढ़ायी गई।

द्वितीय चरण में कक्षा 2, 4, 7, 10 और 12 की पुस्तकें सत्र 2007-08 के कक्षा में पढ़ाए जाने के लिए तैयार हुई।

तृतीय चरण में कक्षा 5 और 8 की पुस्तकें सत्र 2008-09 के लिए तैयार की गयी।

नए पाठ्यक्रम और नई पुस्तकों में रूपरेखा द्वारा पाठ्यचर्या क्षेत्र के लिए दिए गए सुझावों को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास किया गया कि विषयवस्तु की प्रस्तुती इस प्रकार की जाए कि वह सूचना

का अंबार न लगाएँ वरन् बच्चों में पढ़ने लिखने व समझने की प्रवृत्ति को पैदा कर सकें। प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर की विषयवस्तु विभिन्न विषयों के बीच संबंध दर्शाती है और बच्चों के दैनिक अनुभवों से जुड़ाव का आभास देती है। आशा की जानी चाहिए कि पाठ्यचर्या के बोझ के कारण बच्चों के बढ़ते तनाव को कम करने तथा विद्यार्थियों की समझ का आनन्द विकसित कर उनके सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो सकेंगे।